ToB बालमंच

मासिक | अप्रेल -2021 | नन्हीं कलम से ……….. ✍

इस अंक में पढ़ें

क्यों लगती है गर्मी में प्यास बार-बार ?

स्कूल ऑन मोबाइल (SOM) विशेषांक

प्रधान सम्पादक :- रूबी कुमारी
उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)

अंक – 11

संपादक :- त्रिपुरारि राय
म. वि. रौटी, महिषी (सहरसा)

प्रधान संपादिका के कलम से....

प्यारे बच्चों ,

बाल कलाकारों के उत्कृष्ट क्रियाकलापों, रचनाओं, गतिविधियों को समर्पित "TOB बालमंच" का 11 वां अंक प्रकाशित करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

यह अंक हमारे और आपके लिए बेहद खास है क्योंकि इसको बेहद खास बनाने में आपका भरपूर साथ मिला है। मैं देख रही हूं कि बिहार राज्य के हजारों बच्चे बालमंच से जुड़ चुके हैं। वे अपनी बेहतरीन रचनाएं, चित्रकारी, लेख ,बालमन इत्यादि को बड़े उत्साह से हमें भेजते हैं और उन्हें बालमंच में प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है।

आज अपार हर्ष के साथ यह सूचित करते हुए आपको बताना चाहती हूं कि अब आपका यह बालमंच सिर्फ बिहार तक ही सीमित ना रहकर ग्लोबल होने जा रहा है। अब आपकी रचनाएं व कलाकारियों को पूरा बिहार ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी देखा और सराहा जाएगा।

बच्चों! इस अंक में आपके पढ़ाई के लिए जो संजीवनी है, "स्कूल ऑन मोबाइल", इसके बारे में भी प्रमुखता से चर्चा की गई है। इस कोरोना महामारी में आपके स्कूल बंद हो गए हैं, आपकी पढ़ाई ठप हो गई है। प्राइवेट स्कूल तो ऑनलाइन पढ़ाई करवा रहे थे लेकिन सरकारी विद्यालय के बच्चों तक ज्ञान के प्रकाश को पहुंचाने वाला कोई नहीं था। लेकिन टीचर्स ऑफ बिहार ने इसकी जोरदार शुरुआत की और आज फेसबुक लाइव के माध्यम से 'स्कूल ऑन मोबाइल' फेसबुक ग्रुप पर उत्कृष्ट शिक्षण प्रदान कराया जा रहा है। यह ऑनलाइन शिक्षा का अलख जगाने वाला मंच TOB ही तो है। यदि आपको भी जरूरत है ऑनलाइन क्लासेज की तो फेसबुक पर जाकर स्कूल ऑन मोबाइल सर्च करें और कक्षा 5 से लेकर कक्षा 10वीं तक की ऑनलाइन शिक्षा जरूर प्राप्त करें। बिहार सरकार द्वारा डिजाइन की गई कैचअप कोर्स पर आधारित यह ऑनलाइन शिक्षा आपके अधिगम संबंधी क्षति की पूर्ति में अत्यधिक सहायक होगा साबित होगा।

टीचर्स ऑफ बिहार ने हमेशा सबसे पहले व अनोखा प्रयास किया है आप के सर्वांगीण विकास के लिए। हमेशा आपदा को सकारात्मक रूप से अवसर में परिवर्तित किया है। इसलिए अपनी प्रतिभा को इस सुनहरे बालमंच के जरिए एक नई पहचान अवश्य दें और हक से कहें - "यह है हमारा बालमंच, TOB बालमंच।"

हमारे नन्हे-मुन्ने बच्चे तथा बालमंच की उज्जवल भविष्य की कामनाओं के साथ.....

रूबी कुमारी
प्रधान संपादिका
बालमंच,नन्हीं कलम से....

सम्पादकीय

आपके हाथ 'ToB बालमंच' का ।। वां अंक को सोंपते हुए हम काफी खुश हैं| खुश हों भी क्यों ना ? ये विशेषांक 'स्कूल ऑन मोबाइल' विशेषांक जो है| आप अपने घरों में बैठकर टीचर्स ऑफ़ बिहार के सौजन्य से आयोजित ऑनलाइन क्लास का मजा ले रहें हैं| यहाँ पूरे बिहार से सभी विषयों के सेकड़ों चुने हुए शिक्षक आपके सामने अपने नियमित समय पर आ कर आपसे बात कर रहे हैं| आप भी ससमय अपने खेलने-कूदने के समय से कुछ घंटे निकाल कर इस कार्यक्रम का हिस्सा बन रहे हैं| बच्चों, सच पूछो तो आपके बिना स्कूल ऑन मोबाइल का ये कार्यक्रम बिलकुल अधूरा है| इसलिए जो बच्चे अभी तक नहीं जुड़ पाए हैं वे अपने अभिभावकों से बात कर मोबाईल पर जरूर जुड़ें|

इस बार से बालमंच में एक नए स्थाई स्तम्भ आपके मन की बात यानि 'बालमन' की शुरुआत कर रहे हैं| इस स्तम्भ में हम आपके मन की बात को प्रकाशित करेंगे जिसमें बालमंच के बारें में आपकी सोच और आपकी राय को प्रकाशित की जाएगी| एक और स्थाई स्तम्भ 'खेल - खेल में योगा' की भी शुरुआत की गई हैं जिसमें योग के प्रमुख आसनों और प्राणायामों की जानकारी दी जाएगी|

बच्चों, आपको बालमंच का ये अंक कैसा लगा? हमें हमारे इमेल या व्हाट्सअप के माध्यम से अवश्य बताएँ| आपके सन्देश की प्रतीक्षा में.....

आपका मित्र

त्रिपुरारि राय,
सम्पादक सह ग्राफिक्स डिजाइनर
ToB बालमंच

प्रेरक प्रसंग

"आशावादी बनिये निराशावादी नहीं"

एक गांव में एक किसान रहता था, उसे जानवरों से बहुत प्यार था इसलिए उसने अपने घर में बहुत सारी गाय और भैंस पाल रखी थीं। उन्हीं का दूध बेचकर वह अपना जीवन यापन करता था। एक बार किसान ने एक कुत्ता और खरगोश को भी पाल लिया। कुछ दिन बाद उसके मन में इन दोनों के साथ खेलने का विचार आया। इस विचार से वह दोनों को एक खेत पर लेकर गया और उसने खेत में बहुत सारे छेद कर दिए। उन्हीं में से किसी एक छेद में 'हड्डी और गाजर' छिपा दी।

अब उसने कुत्ते और खरगोश को बुलाकर कहा कि तुम में से जो भी पहले 'हड्डी और गाजर' ढूंढ कर लाएगा, उसे मैं इनाम दुंगा। खरगोश बहुत ही आशावादी था, उसे पूरी उम्मीद थी कि वह 'हड्डी और गाजर' को ढूंढ ही निकलेगा। वहीं कुत्ता बहुत ही निराशावादी था, वह मन ही मन सोच रहा था कि यह क्या मजाक है? इतने बड़े खेत में भला कोई 'हड्डी और गाजर' कैसे ढूंढ सकता है?

सम्पादक मंडल

प्रधान संपादिका:-	रूबी कुमारी, उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)
सम्पादक एवं ग्राफिक्स डिजाइनर :-	त्रिपुरारि राय, म. वि. रौटी, महिषी (सहरसा)
सह-संपादिका :-	ज्योति कुमारी, म.वि. भनरा, (बाँका)
प्रूफ़ रीडर:-	विकास कुमार, म.वि.महिसरहो,महिषी (सहरसा)
सहयोगकर्ता ;-	1. मृत्युंजयम् , म.वि.नवाबगंज, समेली, (कटिहार) 2. रंजेश कुमार, प्रा. वि. छुरछुरिया. फारबिसगंज (अररिया)
संरक्षक:-	1. शिव कुमार, संस्थापक- टीचर्स ऑफ़ बिहार 2. ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन, तकनीकी टीम

-: स्थाई स्तंभ :-

1. सम्पादकीय
2. उदबोधन
3. आवरण कथा
4. कविता
5. कहानी
6. हँसो रे बाबू
7. बूझो तो जानें
8. वैज्ञानिक कारण
9. कहानी बनाओ प्रतियोगिता
10. अखबारों की नजर में हम
11. उभरते सितारे
12. तकनीकी कोना
13. बालमन
14. विद्यालयी क्रियाकलाप
15. क्या आप जानते हैं ?
16. अंग्रेजी सीखें
17. ड्राइंग / पेंटिंग
18. उभरते सितारे
19. फोटो ऑफ़ द मंथ
20. हिंदी ज्ञान
21. प्रमुख दिवसें
22. प्रेरक प्रसंग
23. रोचक तथ्य
24. खेल-खेल में योग
25. तुम भी बनाओ.....
26. आपकी बात आपकी जुबानी

यही सोचकर कुत्ता खेत में बने एक बड़े से गड्ढे के पास बैठ गया।

वहीं खरगोश पूरे जोश के साथ खेत में गाजर ढूंढने में लग गया। उसने एक-एक कर सारे छेद देखे लिए लेकिन उसे 'हड्डी और गाजर' कही नहीं मिले। फिर उसने कुत्ते को आराम से एक गड्ढे के पास बैठे देखा और सोचा कि बस यही एक गड्ढे को दिखना छूट गया है। अब वह उसी गड्ढे में 'हड्डी और गाजर' ढूंढने लगा और संयोग से वहीं ये दोनों चीजें उसे मिल गई। अब तो उसकी खुशी को ठिकाना ही नहीं था।

कुत्ते की निराशावादी सोच ने उसे बड़े आराम से हारने दिया और खरगोश को आराम से जीतने दिया। कुत्ते ने आखिर पहले ही मान लिया था कि इतने बड़े मैदान में 'हड्डी और गाजर' मिल ही नहीं सकते और इसिलिए उसने कोशिश तक नहीं की।

प्यारे बच्चो हम में से कई लोग इसी तरह निराशावादी सोच के कारण प्रयास करने से डरते हैं और कठिनाइयों से भागते है। जबकि हो सकता है कि समस्या का समाधान बिलकुल हमारे करीब ही हो।

विकास कुमार
म.वि. महिसरहो, महिषी
(सहरसा)

शुभकामना संदेश

बाल साहित्य का बच्चों के मानसिक और साहित्यिक विकास पर व्यापक असर होता है। आजतक बालसाहित्य की कमी महसूस की जाती रही है। आज के परिप्रेक्ष्य में जबकि बच्चे आज घरों में हैं अतः इस समय में भी उनकी रचनात्मकता में कमी ना हो इसलिए इस पत्रिका की भूमिका और भी बढ़ गई है। मुझे काफी खुशी हो रही है कि टीचर्स ऑफ बिहार के द्वारा बच्चों की अपनी पत्रिका 'ToB बालमंच' का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका बच्चों में छिपी प्रतिभा को बाहर निकालने का एक सशक्त माध्यम है। पत्रिका के सभी स्थाई स्तंभ बच्चों को अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए मार्ग प्रशस्त करती रहेगी। यह पत्रिका बच्चों के साथ-साथ शिक्षकों के लिए भी एक नवाचार है | मुझे खुशी हो रही है कि इस पत्रिका के माध्यम से बच्चे अपने अंदर की छिपी प्रतिभा को सामने ला रहे हैं। आप सब इसी तरह इस नेक कार्य में लगे रहिए।

मेरी तरफ से संपादक मंडल सहित टीचर्स ऑफ बिहार के सभी सदस्यों को साधुवाद।

धन्यवाद

मो. सैयद अब्दुल मोइन
पूर्व निदेशक, दूरस्थ शिक्षा,
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना (बिहार)

बाल मंच शिक्षा के क्षेत्र में नवोन्मेष के लिये प्रतिबद्ध गुरुओं और प्रतिभा एवं जिज्ञासा से भरे हुए नौनिहालों का एक साझा मंच है जिसपर दोनों की नित नवीन तरीकों से सीखने एवं सिखाने के ललक एवं कौशल का रचनात्मक प्रदर्शन होता है। इस पत्रिका के नन्हें पदचिह्नों ने अब तक काफी दूरी तय कर ली है और इसकी आगे की यात्रा के लिए मेरी और से अशेष शुभेच्छाएं।

निशीथ प्रणीत सिंह,
DPO, समग्र शिक्षा. बाँका

बूझो तो जानें

1. अगर प्यास लगे तो पी सकते हैं
भूख लगे तो खा सकते हैं
और अगर ठण्ड लगे तो उसे जला भी सकते हैं
बोलो क्या है वो ?

2. वह कोनसी चीज़ है जिसका रंग काला है
वह उजाले में तो नजर आती है
परन्तु अंधेरे में दिखाई नहीं पड़ती

उत्तर अगले अंक में .....

क्या आप जानते हैं?

विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस प्रत्येक वर्ष '23 अप्रैल' को मनाया जाता है। इसे 'विश्व पुस्तक दिवस' भी कहा जाता है। इंसान के बचपन से स्कूल से आरंभ हुई पढ़ाई जीवन के अंत तक चलती है। लेकिन अब कम्प्यूटर और इंटरनेट के प्रति बढ़ती दिलचस्पी के कारण पुस्तकों से लोगों की दूरी बढ़ती जा रही है। आज के युग में लोग नेट में फंसते जा रहे हैं। यही कारण है कि लोगों और किताबों के बीच की दूरी को पाटने के लिए यूनेस्को ने '23 अप्रैल' को 'विश्व पुस्तक दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया। यूनेस्को के निर्णय के बाद से पूरे विश्व में इस दिन 'विश्व पुस्तक दिवस' मनाया जाता है।

प्रस्तुतकर्ता:- कविता काजल

कहानी बनाओ प्रतियोगिता

दिए गए चित्र को देखें और उसपर एक सुन्दर सा कहानी लिख कर हमें भेजें| उत्कृष्ट कहानी को टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ से पुरष्कृत किया जाएगा | कहानी के साथ अपना पूरा पता और फोन नम्बर अवश्य दें |

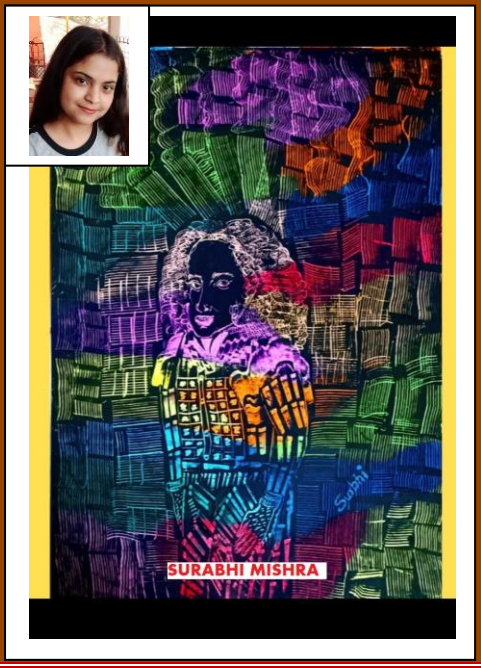

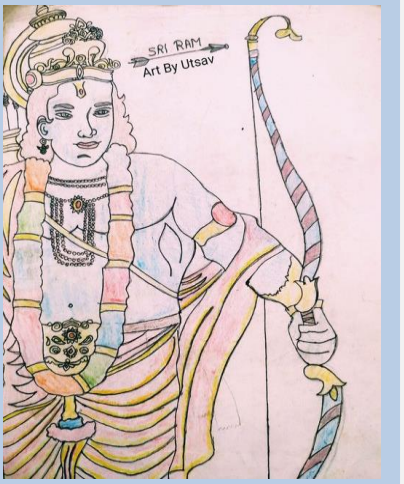

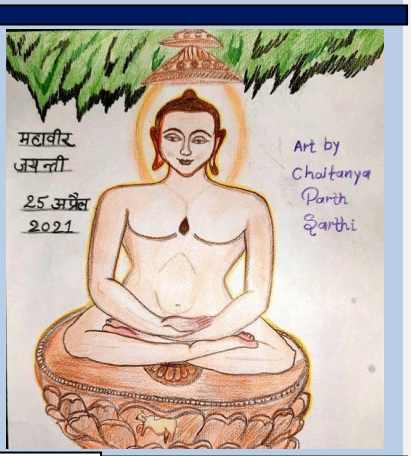

Shreyansh Gupta, Class- 1

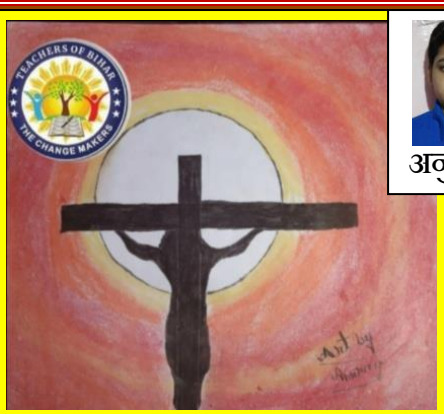

अनुराग

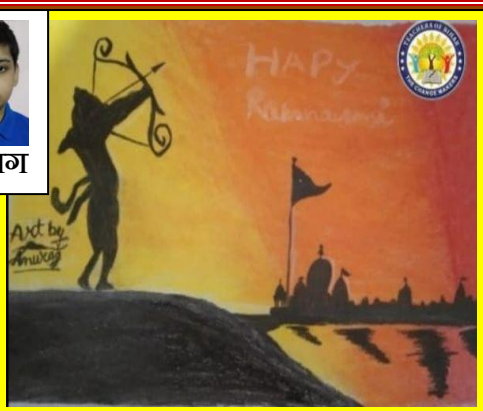

विद्यालयी गतिविधि

राजकीय बुनियादी विद्यालय बखरी, प्रखण्ड- मुरौल, जिला- मुजफ्फरपुर में विद्यालय में पदस्थापित शिक्षक केशव कुमार के कुशल निर्देशन में वर्ग 6-8 में अध्ययनरत बच्चों के लिए विभागीय निर्देशानुसार दैहिक दूरी का पालन करते हुए सूक्ष्म प्राणायाम एवं योगाभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चें वज्रासन की मुद्रा में ओंकार ध्वनि का उच्चारण करते हुए एवं योगा गीत का आनन्द लेते हुए।

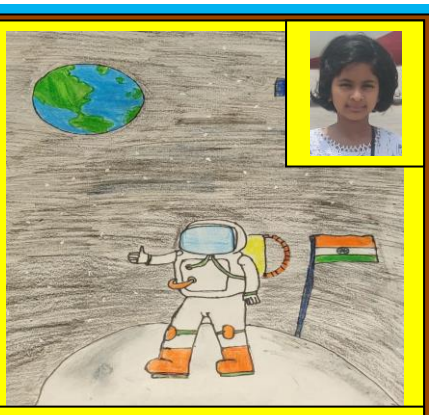

Shreyashi Shiksha, Class- 4

Divyansh Gupta

Chirayu Siddharth, Class 4

अंग्रेजी सीखें

A CONCEPT OF ENGLISH GRAMMAR AND COMPOSITION

By- T. Roy

NOUN

Nouns refer to persons, animals, places, things, ideas, or events, etc.

Example:

- **Person** - a name for a person: - Max, Julie, Catherine, Michel, Bob, etc.
- **Animal** - a name for an animal: - dog, cat, cow, kangaroo, etc.
- **Place** - a name for a place: - London, Australia, Canada, Mumbai, etc.
- **Thing** - a name for a thing: - bat, ball, chair, door, house, computer, etc.
- **Idea** - A name for an idea: - devotion, superstition, happiness, excitement, etc.

KINDS OF NOUN

1. Proper noun **2. Common Noun** **3. Abstract Noun**

4. Material Noun **5. Collective Noun**

PROPER NOUN-

A **proper noun** is a name which refers only to a single person, place, or thing and there is no common name for it. In written English, a proper noun always begins with capital letters.

Examples: Patna, Ganga, Himalaya, Rohit, Sonam etc

COMMON NOUN-

A **common noun** is a name for something which is common for many things, person, or places.

Examples: City, River, Mountain, Cow, Man etc.

ABSTACT NOUN-

An **abstract noun** is a word for something that cannot be seen but is there. It has no physical existence. Generally, it refers to ideas, qualities, and conditions.

Example: Truth, lies, happiness, sorrow, time, friendship, humor, patriotism, etc.

MATERIAL NOUN-

It refers to a **material** or substance from which things are made of.

Examples: silver, gold, iron, cotton, diamond and plastic.

COLLECTIVE NOUN

A **collective noun** is a word for a group of things, people, or animals, etc.

Examples: family, team, jury, cattle, etc.

****

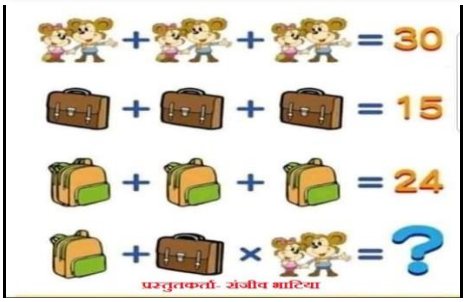

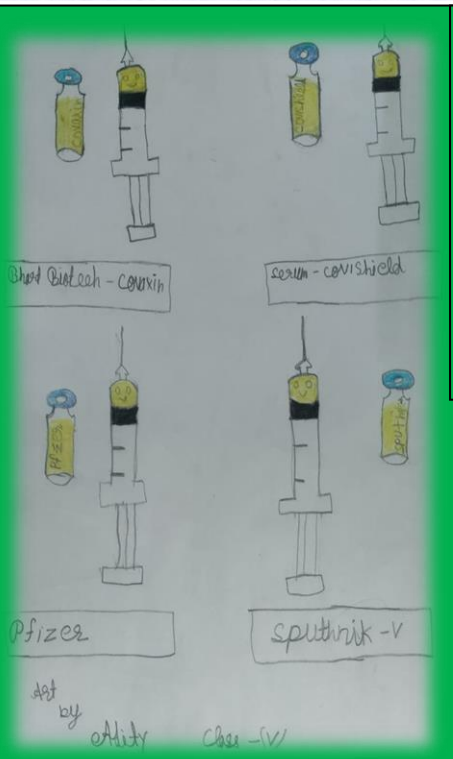

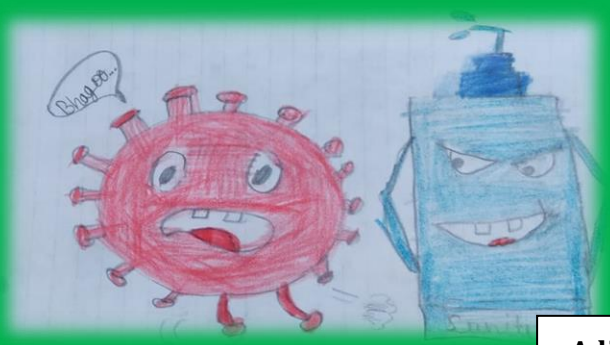

Aditi Kumari, Class- 5

AYON

25अप्रैल 1982 को भारतीय राष्ट्रीय रंगीन दूरदर्शन सेवा का आरंभ हुआ था.

भारत में टेलीविजन की जब शुरुआत 15 सितंबर 1959 को हुई तो दूरदर्शन ने ही पहली बार टीवी पर चित्र प्रसारित किया था..दूरदर्शन भारतीय टेलीविजन की स्थापना दिल्ली में 15 सितंबर 1959 को 'टेलीविजन इंडिया' के नाम से हुई थी.

1975 में इसका हिंदी नामकरण 'दूरदर्शन' नाम से किया गया. शुरु-शुरु में इसका प्रसारण सप्ताह में सिर्फ तीन दिन आधा-आधा घंटे होता था.1959 में शुरू होने वाले दूरदर्शन का 1965 में रोजाना प्रसारण प्रारंभ हुआ, पांच मिनट के समाचार बुलेटिन की शुरुआत भी इसी साल हुई थी.

1986 में शुरू हुए 'रामायण' और इसके बाद शुरू हुए 'महाभारत'ने देश में टीवी देखने वालों का एक नया वर्ग तैयार किया था.हमें याद है जब रामायण और महाभारत के प्रसारण के दौरान सुबह देश की सड़कों पर सन्नाटा पसर जाया करता था.

25अप्रैल 1982 से रंगीन टेलीविजन आने के बाद लोगों का रूझान इस ओर अधिक बढ़ा. एशियाई खेलों का दूरदर्शन पर प्रसारण ने भारतीय टेलीविजन के इतिहास में क्रांतिकारी बदलाव लाए. 1966 में कृषि दर्शन कार्यक्रम देश में हरित क्रांति का सूत्रधार बना.कृषि दर्शन सबसे लंबा चलने वाला दूरदर्शन का कार्यक्रम है।
हम लोग, बुनियाद, नुक्कड़, रामायण, महाभारत जैसे कार्यक्रमों ने दूरदर्शन की लोकप्रियता को आसमान की ऊंचाइयों पर पहुंचाया। 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' जैसा विज्ञापन लोगों के बीच एकता का संदेश देने में कामयाब रहा.

उस समय यूनेस्को ने भारत को दूरदर्शन शुरू करने के लिए 20 हजार डॉलर की सहायता राशि और 180 फिलिप्स टेलीविजन सेट दिए थे.आपको बता दें कि तीन नवंबर 2003 में दूरदर्शन का 24 घंटे चलने वाला समाचार चैनल शुरू किया गया था.

आज भारत का दूरदर्शन राष्ट्रीय चैनलों सहित क्षेत्रीय प्रसारणो के साथ साथ खेल,शैक्षिक,संगीत और राष्ट्रीय गतिविधियों पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा है.नेशनल टीवी,डीडीइंडिया,डीडीन्युज,डीडीभारती,डीडीकिसान,डीडीस्पोर्ट्स राज्य सभा लोकसभा सहित दर्जनों चैनलों के माध्यम महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा है.

प्रस्तुति: सुरेश कुमार गौरव

Divya Kumari, Class-5

दिव्या कुमारी द्वारा गेंहूँ और उसके आंटे से महात्मा गांधी का चित्र बनाया गया |

फोटो ऑफ़ द मंथ

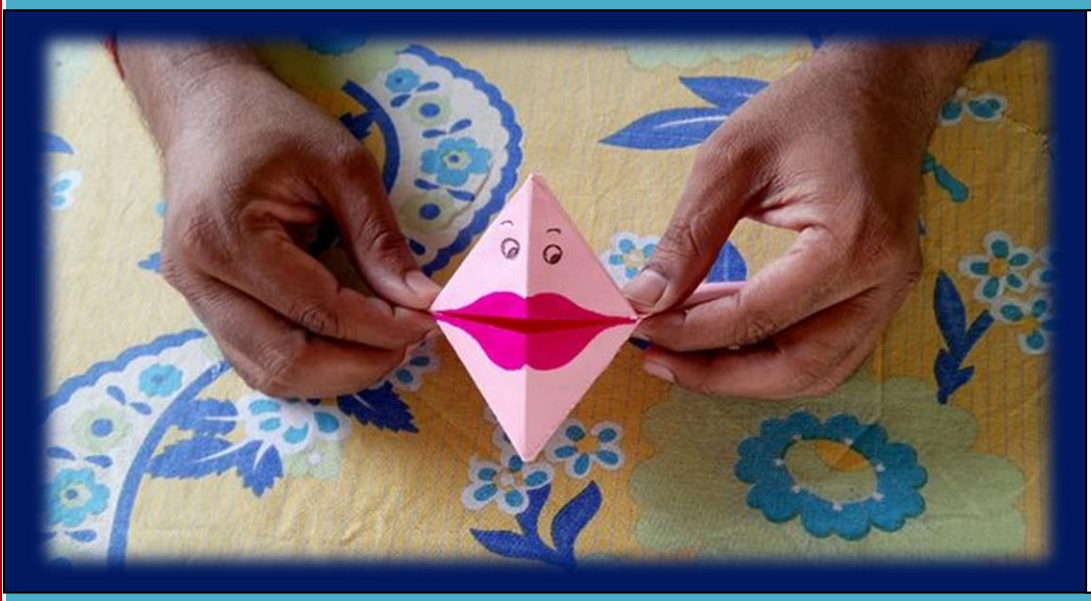

वर्गाकार कागज को कुछ सरल मोड़ देकर एक मजेदार खिलौना बना सकते हैं| अपने हाथ हिला कर हम गप्पी को गप करते दिखा सकते हैं जो करोना संक्रमण पर कुछ संदेश दे रहा है|

:- मृत्युंजय आर्या

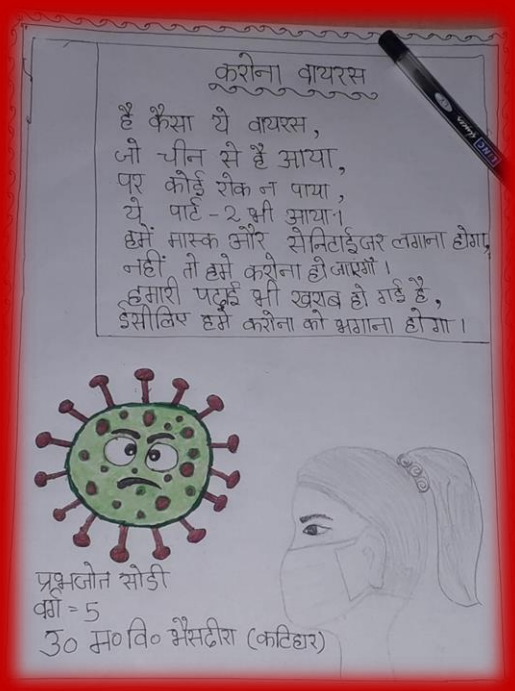

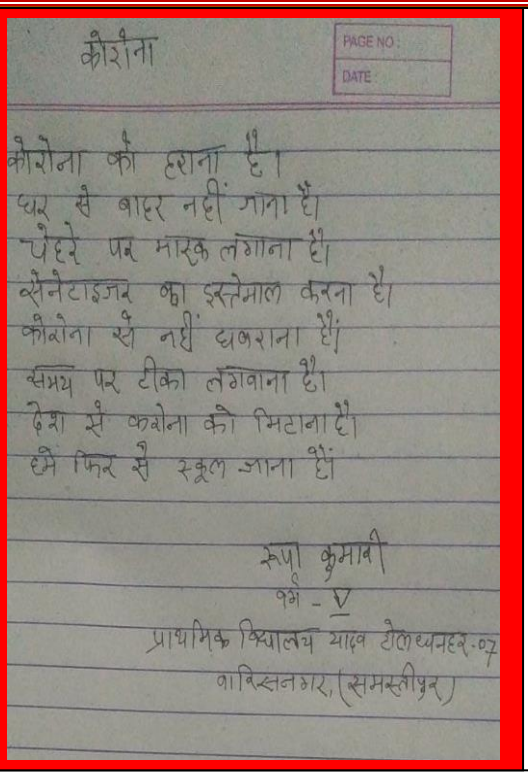

कोरोना

कोरोना को हराना है।
घर से बाहर नहीं जाना है।
चेहरे पर मास्क लगाना है।
सेनेटाइजर का इस्तेमाल करना है।
कोरोना से नहीं घबराना है।
समय पर टीका लगवाना है।
देश से करोना को मिटाना है।
हमें फिर से स्कूल जाना है।

रूपा कुमारी
वर्ग - V
प्राथमिक विद्यालय यादव टोल ध्वनहर-07
वारिसनगर, (समस्तीपुर)

तुम भी बनाओ..........

बच्चों नारंगी सहित इसके छिलके को एक बच्चे के आकार में इसप्रकार से काटा गया है कि इसे देखने पर लगता है कि किसी बच्चे ने पूरे संतरे को उठा रखा है|

तुम भी अपने घरों में इसे बनाने का प्रयास करो |

छोटे बच्चे इस आकार को काटने के लिए चाकू का इस्तेमाल अपने अभिभावकों के सामने करें| **:- मृत्युन्जयम**

TEACHERS OF BIHAR

The change makers....

वैज्ञानिक कारण

क्यों लगती है गर्मी में प्यास बार-बार?

गर्मी में बढ़ हुआ तापमान वातावरण के साथ शरीर को भी प्रभावित करता है और शरीर का तापमान बढ़ाता है। बढे हुए तापमान को नियंत्रित करना और उसे सामान्य रखने का कार्य शारीरिक प्रणाली करती है। इस प्रणाली में मुख्यत: जिसका समावेश होता है वो है पसीना आना। शरीर पानी को पसीने के रूप में त्वचा से उत्सर्जित करता है और शरीर का तापमान नियंत्रित करता है| इस प्रक्रिया में शरीर से पानी की मात्रा कम हो जाती है और इस घटे हुए मात्रा के पूर्ती के लिए शरीर अपने को प्यास के रूप में एहसास कराता है| उस प्यास के शमन के लिए हम पानी का सेवन करते हैं और ये चक्र चलता है| आम तौर पर अपने घर में जो पानी का मटका होता उसका पाणी ठंडा होना इसी का प्रमाण है|

सर्दी में शरीर का तापमान निर्धारित स्तर से कम रहता है इसलिए शरीर से पानी का उत्सर्जन कम होता है और प्यास कम लगती है| पानी का उत्सर्जन के कारण ही सर्दी और गर्मी में प्यास की इच्छा मौसमनुसार बदलती है।

-: प्रस्तुतकर्ता :-

त्रिपुरारि राय
मध्य विद्यालय रौटी, महिषी (सहरसा)

हंसो रे बाबू

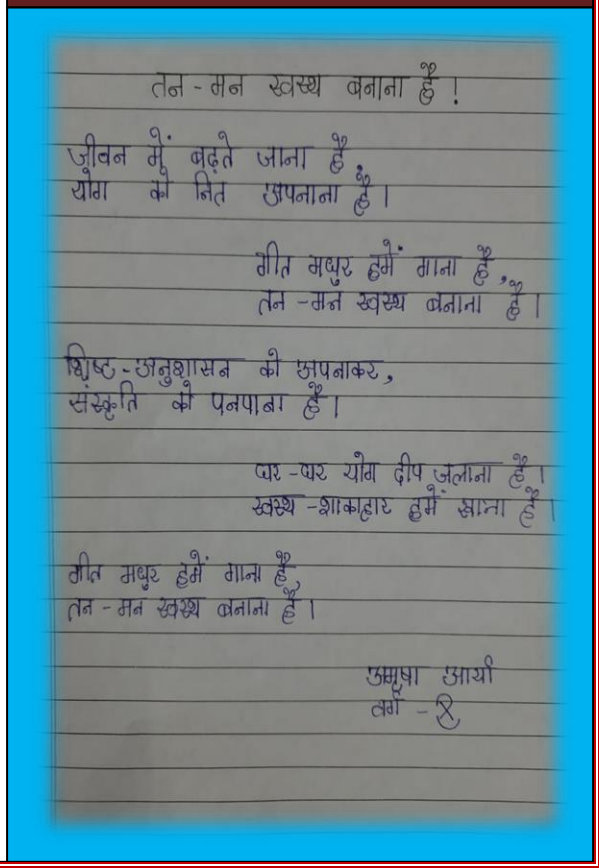

तन-मन स्वस्थ बनाना है।

जीवन में बढ़ते जाना है,
योग को नित अपनाना है।

गीत मधुर हमें गाना है,
तन-मन स्वस्थ बनाना है।

शिष्ट-अनुशासन को अपनाकर,
संस्कृति को पनपाना है।

घर-घर योग दीप जलाना है।
स्वस्थ-शाकाहार हमें खाना है।

गीत मधुर हमें गाना है,
तन-मन स्वस्थ बनाना है।

अनुष्का आर्या
वर्ग - 8

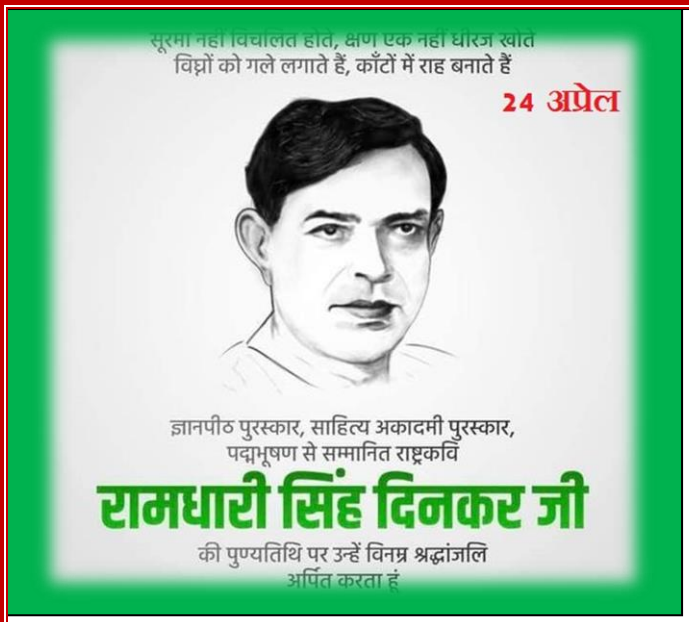

सूचना:- आप भी अपने विद्यालय के बच्चों को प्रोत्साहित कर उनसे उनकी छिपी हुई प्रतिभा को कला के माध्यम से सामने लाकर हमें भेजें | चुने हुए विधा, यथा- कविता, कहानी, चित्रकारी, चुटकुले, पहेली आदि को 'ToB बालमंच' पत्रिका में स्थान दिया जाएगा |

बच्चों की चुनिन्दा रचनाएँ हमारे इमेल- balmanch.teachersofbihar@gmail.com पर या **Whatsapp No- 62028 39650** पर भेजें | आप टेलीग्राम ग्रुप https://t.me/joinchat/1933vhvzywkxNjQ1 से भी जुड़ कर बच्चों की रचनाएँ भेज सकते हैं, और हाँ बच्चों की रचना के साथ उनका नाम, वर्ग और विद्यालय का नाम लिखना ना भूलें|

शुभकामना सहित |

राजकीय बुनियादी विद्यालय शाहपुर, मधुबनी, बिहार में बच्चों के बीच चित्रकला का आयोजन किया गया |

HARSHIT, CLASS- 4

स्कूल ऑन मोबाइल फेसबुक ग्रुप से बच्चों को दी जा रही है शिक्षा

प्रतिनिधि, बाँसी

कोरोना वायरस को लेकर जिले के सभी स्कूल बंद हो चुके हैं. दूसरी लहर में सरकारी स्कूल के बच्चों को शैक्षणिक नुकसान भी हो रहा है. साथ ही बच्चों की पढ़ाई भी बाधित हो रही है. इसकी भरपाई करने के लिए प्राइवेट स्कूलों ने अलग-अलग ऐप से ऑनलाइन पढ़ाई शुरू कर दी है. जबकि सरकारी स्कूलों में भी टीचर ऑफ बिहार स्कूल ऑन मोबाइल फेसबुक ग्रुप के माध्यम से लाइव क्लास शुरू कर दी गयी है.

इसके लिए सात शिक्षक शिक्षिकाओं की अलग-अलग दो टीम बनायी गयी है. जिसके जरिये पांचवीं से दसवीं तक की विद्यार्थियों को पढ़ाने का काम आरंभ कर दिया गया है. सात शिक्षकों के दो ग्रुप में शामिल प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय सरौनी की शिक्षिका रूबी कुमारी ने बताया कि फेसबुक लाइव के जरिए बच्चों को पढ़ाया जा रहा है. बताया गया कि दोपहर एक बजे से शाम के 4:30 बजे तक कक्षाएं चलती हैं. आधे घंटे का एक पीरियड होता है. स्कूल ऑन मोबाइल फेसबुक ग्रुप से जुड़े बच्चे यहां पढ़ाई करते हैं, जो सवाल उन्हें समझ में नहीं आता उन्हें कमेंट बॉक्स में लिखते हैं. जिसके बाद शिक्षक उन्हें पुनः समझाते हैं. साथ ही होमवर्क की तस्वीर खींचकर फेसबुक लाइव में डालने का काम बच्चे करते हैं.

अरूण कुमार अमन.

विनोद कुमार राय.

निखिलेश क्रांति.

राघवेंद्र कुमार झा.

रश्मि चौधरी.

रूबी कुमारी.

उमाकांत कुमार.

जिसे ऑनलाइन शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा देखा जाता है. जानकारी हो कि शिक्षिका रूबी कुमारी अपने नये-नये तरीके से स्कूली छात्रों को पढ़ाने के लिए मशहूर हैं. शिक्षा में नवाचार के माध्यम से सभी विषयों की कई प्रश्नों का आसानी से हल करने के लिए शिक्षिका की प्रशंसा देश के उद्योगपति से लेकर नामचीन अभिनेता भी कर चुके हैं. दो ग्रुप में शामिल शिक्षक-शिक्षिका जिले के विभिन्न प्रखंडों से फेसबुक के जरिए बच्चों को पढ़ाने का कार्य कर रहे हैं. ए और बी ग्रुप बनाया गया है. ए ग्रुप में विनोद कुमार राय, निखिलेश क्रांति, रश्मि चौधरी और अरुण कुमार अमन को रखा गया है. वहीं बी ग्रुप में रूबी कुमारी, उमाकांत कुमार और राघवेंद्र कुमार झा को जिम्मेदारी सौंपी गयी है. ये सात शिक्षक बांका जिले से हैं जो ऑनलाइन क्लास ले रहे हैं.

per.prabhatkhabar.com

सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिये चलायी जा रही ऑनलाइन क्लास

प्रतिनिधि, दाउदनगर

सूबे के सरकारी विद्यालयों के कक्षा पांचवीं से दसवीं तक के बच्चों के लिये टीचर्स ऑफ बिहार के बैनर तले स्कूल ऑन मोबाइल फेसबुक लाइव कार्यक्रम के तहत ऑनलाइन पढ़ाई करायी जा रही है.सरकारी विद्यालय के कुशल एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा सरकारी विद्यालय के बच्चों के लिए ऑनलाइन क्लास कराये जा रहे हैं. ऑनलाइन क्लास के लिये शिक्षकों के समूह में शामिल एवं औरंगाबाद जिला के टीचर्स ऑफ बिहार के डिस्ट्रिक्ट मेंटर डॉ सुनील कुमार ने बताया कि कोविड-19 संक्रमण के बढ़ते प्रभाव के कारण पिछले सत्र में विद्यालय पूर्णतः बंद रहे. इस सत्र में भी फिलहाल स्थिति लगभग वही है. ऐसे में बच्चे अपने घर पर ही रहकर पढ़ाई कर सकें, इसके लिये स्कूल ऑन मोबाइल फेसबुक लाइव क्लास में कक्षा पांचवीं से दसवीं तक के बच्चे भाग ले सकते हैं. डॉ सुनील कुमार ने बताया कि ऑनलाइन क्लास के लिये कुल 50 शिक्षकों को दो

ऑनलाइन क्लास लेते शिक्षक डॉ सुनील कुमार .

समूहों में बांटा गया है. प्रतिदिन सोमवार से शनिवार तक दोपहर बाद एक बजे से संध्या 4:30 बजे तक कक्षाएं संचालित हो रही हैं. इसमें अलग-अलग कक्षाओं के लिये विभिन्न विषयों की अवधारणाओं को बच्चे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं.

टीचर्स ऑफ बिहार के द्वारा स्कूल ऑन मोबाइल कार्यक्रम की पुनः शुरूआत- रंजेश

सन्मार्ग/फारबिसगंज। टीचर्स ऑफ बिहार समूह द्वारा बिहार के सरकारी स्कूलों के बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रखने के मिशन की शुरूआत कैचअप कोर्स की ऑनलाइन लाइव कक्षा के साथ शुरू हुई। इस समूह के स्कूल ऑन मोबाइल कार्यक्रम अंतर्गत इसके फेसबुक ग्रुप पर बिहार के सरकारी विद्यालयों के वर्ग पांचवीं से दस वीं कक्षा तक कैचअप कोर्स की लाइव क्लासेज संचालन हेतु बिहार के अलग-अलग जिलों से शिक्षकों ने भाग लिया।

रूटीन के अनुसार शिक्षकों की दो समूह ऑल्टरनेट विधि से अपने-अपने पसंदीदा विषयों के साथ स्कूल ऑन मोबाइल फेसबुक ग्रुप से सामान्यतः दोपहर एक बजे से तीन पैतालिश अपराह्न तक लाइव कक्षाओं का संचालन किया। स्कूल ऑन मोबाइल कार्यक्रम के टीम लीडर उमाकांत कुमार ने कहा कि यह कार्य हमसबों के लिए चुनौतीपूर्ण अवश्य है परंतु असंभव नहीं। टीम भावना एवं स्वनुशासन के साथ हमेशा हमलोगों ने सफलता पूर्वक हर मिशन को पहले भी पूरा किया है। त्याग, समर्पण एवं निःस्वार्थ सेवा भाव वाले साथियों की मदद से इस मुहिम को भी सफलतापूर्वक अंजाम तक पहुंचाएंगे। इसके लिए विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से रूटीन को प्रकाशित कर दिया गया था ताकि अधिक से अधिक बच्चों तक जानकारी पहुंच सके। उन्होंने ने यह भी बताया कि इस कार्य हेतु पूरे बिहार से लगभग तीन शो शिक्षकों ने स्वेच्छा से बच्चों की सेवा हेतु समय दान का प्रस्ताव टीचर्स ऑफ बिहार समूह को दिया है। टीचर्स ऑफ बिहार समूह तहेदिल से सबों के प्रति आस्था एवं आभार व्यक्त करती है। प्रथम फेज में पचास साथियों के साथ इसकी शुरूआत की गई है। टीचर्स ऑफ बिहार समूह ने सरकारी विद्यालय के बच्चों के समस्त हितधारकों से अपील करते हुए कहा है कि इस लाइव क्लासेज को अधिक से अधिक बच्चों तक फेसबुक, व्हाट्सएप, टेलीग्राम एवं टीचर्स ऑफ बिहार के वेबसाइट सोम डोट टीचर्स ऑफ बिहार डॉट ओआरजी के माध्यम से पहुंच स्थापित करने में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान करने करें ताकि बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रखने का मिशन पूरा हो सके।

टीचर्स ऑफ बिहार ने शुरू की ऑनलाइन क्लास

मुरौल. निजी विद्यालयों की भांति सरकारी विद्यालयों के बच्चों के लिए भी बिहार की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं उनकी पूरी टीम ने 23 अप्रैल से ऑनलाइन क्लासेज प्रारंभ किया गया है. उमाकांत कुमार के कुशल निर्देशन में स्कूल ऑन मोबाइल का एक अलग फेसबुक ग्रुप https://tinyurl.com/SchoolonMobile बनाया गया है. इस ग्रुप पर सुनियोजित तरीके से वर्ग पांचवी से दसवीं तक के बच्चों के लिए लाइव कक्षाओं का संचालन 41 कुशल एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा किया जा रहा है.

प्रभात खबर
Tue, 27 April 2021
https://epaper.prabhatkhabar.

तकनीकी कोना

Khan Academy के द्वारा सभी विषय की जानकारी के लिए निर्माण की गई मोबाइल एप्प हैं Khan Academy एप्प। एप्प को डाउनलोड कर के आप गणित, विज्ञान , अर्थशास्त्र और वित्त, कला और मानवता, कंप्यूटिंग आदि विषयो की जानकारी वीडियो एवं टेक्स्ट के जरिये ले सकते है |

यदि आप किसी टॉपिक को ऑफलाइन मोड में पढ़ना चाहते है तो उसे बुकमार्क कर सकते है डाउनलोड कर सकते है |

https://cutt.ly/Her7lJL

:- शिवेंद्र प्रकाश सुमन

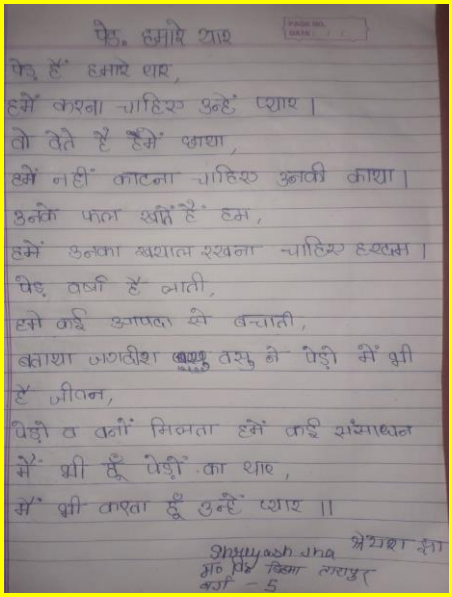

पेड़ हमारे यार

पेड़ हैं हमारे यार,
हमें करना चाहिए उन्हें प्यार।
वो देते हैं हमें छाया,
हमें नहीं काटना चाहिए उनकी काया।
उनके फल खाते हैं हम,
हमें उनका ख्याल रखना चाहिए हरदम।
पेड़ वर्षा है लाती,
हमें कई आपदा से बचाती,
बताया जगदीश ~~बसु~~ वसु ने पेड़ों में भी है जीवन,
पेड़ों व वनों मिलता हमें कई संसाधन
मैं भी हूँ पेड़ों का यार,
मैं भी करता हूँ उन्हें प्यार ॥

Shreyash Jha श्रेयश झा
म० वि० बिहमा तारापुर
वर्ग - 5

केला

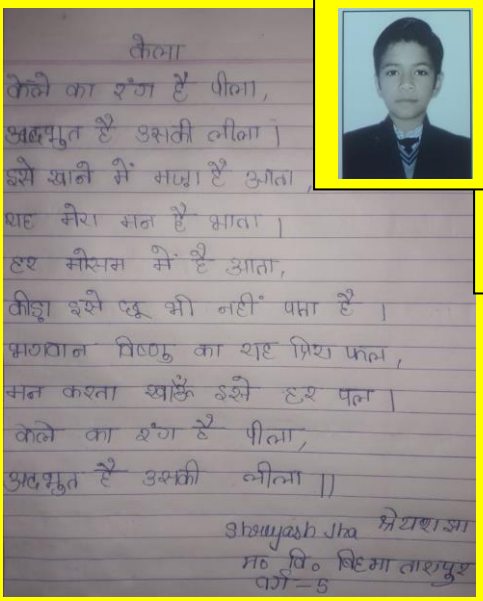

केले का रंग है पीला,
अद्भुत है उसकी लीला।
इसे खाने में मज़ा है आता,
यह मेरा मन है भाता।
हर मौसम में है आता,
कीड़ा इसे छू भी नहीं पाता है।
भगवान विष्णु का यह प्रिय फल,
मन करता खाऊँ इसे हर पल।
केले का रंग है पीला,
अद्भुत है उसकी लीला ॥

Shreyash Jha श्रेयश झा
म० वि० बिहमा तारापुर
वर्ग - 5

आओ योग सीखें

बद्धपद्मासन- बद्धपद्मासन का नाम दो शब्दों के मेल से बना है बद्ध और पद्म । बद्ध अर्थात बंधा हुआ ,पदम अर्थात कमल के समान यह आसन बीमारियों के जोखिम को कम करता है एवं शरीर को स्वस्थ रखने में मदद करता है।

तरीका- दंडासन में बैठकर अपने दाएं टांग ऊपर कर बायें पैर की जंघा पर फिर दूसरे पैर के साथ ऐसा ही करें बायां हाथ पीठ के पीछे से ले जाकर बाएं पैर के अंगूठा को पकड़ना है एवं दायां हाथ पीठ के पीछे से ले जाकर दाएं पैर के अंगूठा को पकड़ना है श्वास की गति सामान्य थोड़ी देर इस अवस्था में रुकेंगे।

सृष्टि कुमारी, कक्षा-१

बालमन

पहले अगर हम कुछ बनाते थे तो हमारे घर के अंदर ही रह जाता था और इसे कोई और नहीं देखता था जिससे हमें कुछ ज्यादा खुशी नहीं होती थी। फिर हमने बालमंच के बारे में सुना और उसमें हम अपने हाथों से बनाए गए कला को देने लगे और अब हमारी बनाए गए वस्तु को पूरा बिहार इसे देखता है इससे हम गौरव महसूस करते हैं।धन्यवाद बालमंच। **जिज्ञासा**

जब से यह बालमंच ई-मैग्जीन आया है, तब से सारे बच्चे उत्साह से अपनी कला को दिखाते और मैगजीन पर डालते हैं। जो बच्चे अपनी कला को दबा कर रखते थे,किसी को दिखा नहीं सकते थे अब उनकी कला को पूरा बिहार देखता है। यह उनके लिए बहुत खुशी की बात है। अब वह सबको अपनी कला दिखा सकते हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद "TOB बालमंच"

दिव्या

प्रमुख दिवसें

10 अप्रैल - जल संसाधन दिवस

13 अप्रैल - जलियाँवाला बाग़ नरसंहार दिवस, खालसा पंथ स्थापना दिवस

14 अप्रैल - डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर जयन्ती, अग्निशमन दिवस

15 अप्रैल - गुरु नानक देव जन्म दिवस, हिमाचल प्रदेश दिवस

16 अप्रैल - महावीर जयंती (जैन), भारतीय रेल परिवहन दिवस

17 अप्रैल - विश्व हीमोफीलिया दिवस

18 अप्रैल - विश्व विरासत दिवस

19 अप्रैल - भारत द्वारा उपग्रह क्षेत्र में प्रवेश दिवस (1975), विश्व यकृत दिवस

20 अप्रैल - डॉक्टर हैनीमैन जन्म दिवस

21 अप्रैल - भारतीय सिविल सेवा दिवस

22 अप्रैल - विश्व पृथ्वी दिवस, जल संसाधन दिवस

23 अप्रैल - विश्व पुस्तक दिवस, मानव एकता दिवस

25 अप्रैल - विश्व मलेरिया दिवस

26 अप्रैल - चेरनोबिल दिवस, विश्व बौद्धिक सम्पदा दिवस

रोचक तथ्य

आज चीन भले ही कुंग-फू कला में महारत हासिल कर चुका है, लेकिन उसे यह कला सिखाने वाला एक भारतीय था, जिसका नाम था बोधिधर्म। उन्हें बोधिधर्मन भी कहा जाता है। कहते हैं कि वह बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए चीन गए थे, जहां उन्होंने कई लोगों को अपना शिष्य बनाया और उन्हें प्राचीन युद्ध कला 'कलरी पट्टू' सिखाई। बाद में इसी 'कलरी पट्टू' को स्थानीय भाषा में कुछ बदलावों के साथ कुंग-फू नाम दिया गया।

पोखरण परमाणु परिक्षण में प्याज का इस्तेमाल किया गया था

जब परमाणु का विस्फोट होता है तो उसके बाद अल्फा, बीटा व गामा रेज निकलती है। इनमें से गामा रेज को सबसे घातक माना जाता है। गामा रेज हमारे शरीर के अंदर तक प्रवेश कर टीशू को नष्ट करना शुरू कर देती है। वैज्ञानिकों का मानना है कि प्याज गामा रेज को बहुत अच्छी तरह से सोख लेता है। इस कारण ये ज्यादा घातक गामा रेंज दूर तक नहीं फैल पाती। पोखरण में परमाणु विस्फोट के दौरान इसी हेतु से प्याज को परीक्षण वाले शॉफ्ट में भरा गया।

हिंदी ज्ञान

..... पिछले अंक का शेष

शब्द

बनावट या रचना के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

बनावट या रचना के आधार पर शब्दों के तीन भेद होते हैं:-

1. रूढ़ शब्द :- **ऐसे शब्द जो किसी निश्चित अर्थ को प्रकट करते हैं लेकिन अगर उनके टुकड़े (खंड) कर दिए जाएँ तो वे निरर्थक हो जाते हैं। ऐसे शब्दों को रूढ़ शब्द कहते हैं। जैसे-फल, फल एक रूढ़ शब्द है, जो एक निश्चित अर्थ प्रकट करता है। लेकिन अगर फ और ल को अलग कर दिया जाये तो इनका कोई अर्थ नहीं रह जायेगा।**

2. यौगिक शब्द :-**दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनने वाले शब्दों को यौगिक शब्द कहते हैं। यौगिक शब्दो के खंड (टूकडे) करने पर भी उन खंडो के अर्थ निकलते हैं। जैसे-पाठशाला-पाठ + शाला शीशमहल-शीश + महल**

3. योगरूढ़ शब्द :-**कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो एक या एक से अधिक शब्दों के मेल से बनते हैं किन्तु अपने सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विशेष अर्थ का बोध कराते हैं। इस प्रकार के शब्द योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। ऐसे शब्दों को बहुव्रीहि समास भी कहते हैं। जैसे-नीलकंठ-नीले कंठ वाला अर्थात शिव भगवान, पंकज: कीचड़ में उत्पन्न होने वाला अर्थात कमल|**

शेष अगले अंक में .....

आपकी बात आपकी जुबानी

बच्चों आपको बालमंच का ये अंक कैसा लगा हमें अवश्य बताएँ| आप हमें नीचे दिए गए किसी भी माध्यम email या whatsapp द्वारा सूचित कर सकते हैं|

email-
balmanch.teachersofbihar@gmail.com

Whatsapp No. :- 6202839650
(Tripurari Roy)

धन्यवाद

उभरते सितारे

जिनको भी प्रशस्ति-पत्र मिल रहा है उनका लिस्ट इस लिंक पर उपलब्ध है:-
https://www.teachersofbihar.org/award

रोहित सरदाना

'ToB बालमंच' और 'टीचर्स ऑफ बिहार' के तरफ से आजतक के वरिष्ठ पत्रकार रोहित सरदाना के आकस्मिक निधन पर उन्हें सादर श्रद्धांजलि अर्पित करती है|

समाप्त